अमेरिका द्वारा भारत की आर्थिक सहायता
सन् 1962 के चीनी आक्रमण के विरुद्ध सैनिक सहायता देने के बावजूद दोनों देश विश्व समस्याओं के प्रति कभी भी समान दृष्टिकोण नहीं अपना सके। संक्षेप में इसकी विवेचना निम्न रूप में करेंगे।

(1) नेहरू युग और भारत-अमेरिकी संबंध (1947-1964)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत को अपने गुट में शामिल करने के लिए अमेरिका ने भारत के प्रति दबाव और सहायता की नीति का अवलंबन किया।
— दिसंबर 1947 में कश्मीर का प्रश्न जब संयुक्त राष्ट्र में उठाया गया तब अमेरिका ने भारत के विरुद्ध पाकिस्तान का समर्थन किया।
— अमेरिका के नहीं चाहने पर भी भारत ने 1949 में साम्यवादी चीन को मान्यता दिया।
— उत्तर कोरिया पर संयुक्त राष्ट्र की सेना द्वारा आक्रमण किए जाने पर अमेरिका की भारत ने आलोचना की।
— 1954 में अमेरिका द्वारा पाकिस्तान के साथ सैनिक संधि किए जाने पर दोनों देशों के संबंधों में काफी कटुता आयी।
— 20 अक्टूबर 1962 को चीन द्वारा भारत पर आक्रमण किए जाने पर भारत के निवेदन पर अमेरिका ने बिना किसी शर्त के पर्याप्त मात्रा में युद्ध-सामग्री भेजी।

(2) शास्त्री युग और भारत-अमेरिकी संबंध (1964-1965)
→ 27 मई 1964 को जवाहर लाल नेहरू के देहांत के बाद लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री बने।
→ शास्त्री युग में जब अमेरिका द्वारा उत्तरी वियतनाम पर बमवर्षा की जाने लगी तब शास्त्री जी अमेरिका की आलोचना की।
→ 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान भी भारत के प्रति अमेरिकी रुख विरोधी रहा।

③. इंदिरा युग और भारत – अमेरिकी संबंध (1966-1977)

भारत-पाक समस्याओं के समाधान के लिए शास्त्री जी ताशकंद जाकर ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद 10 जनवरी 1966 की रात में हृदय गति रुकने से मृत्यु हो गयी। इसके बाद इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनी।

→ अमेरिकी राष्ट्रपति जॉनसन द्वारा भारत-अमेरिकी संबंधों को सुधारने के ख्याल से प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को अमेरिकी यात्रा के लिए निमंत्रित करने पर मार्च 1967 में उन्होंने अमेरिका की सद्भावना यात्रा की।

→ 1969-70 के दौरान वियतनाम के प्रश्न पर दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ गए। 1970 में भारत द्वारा उत्तरी वियतनाम से राजनयिक संबंध स्थापित करने पर अमेरिका द्वारा विरोध किया गया।

→ मई 1974 में पोखरन क्षेत्र में भारत द्वारा सफल आणविक परीक्षण करने पर अमेरिका सहित अधिकांश पश्चिमी देशों ने भारत की आलोचना की।

④. जनता सरकार और भारत – अमेरिकी संबंध (1977-80)

1977 में मोरारजी देसाई भारत के प्रधानमंत्री बने। इस नेतृत्व परिवर्तन से भारत – अमेरिकी संबंधों को एक नई दिशा मिली। अमेरिकी दृष्टिकोण में परिवर्तन के चिह्न दिखने लगे। जनवरी 1978 में अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने भारत की यात्रा की और जून 1978 में मोरारजी देसाई ने अमेरिका की यात्रा की। ऐसा लगा कि दोनों देशों के पारस्परिक संबंधों में अब सुधार होगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।